Knowledgeable Research (KR) 2026, Vol., (5):03
ISSN: 2583-6633, CODEN: KRABAU
International open-access peer-reviewed refereed monthly journal
https://knowledgeableresearch.com/index.php/1

दक्षिण एशिया के प्रति भारत की सॉफ्ट पावर नीति एवं उसकी प्रभावशीलता

Dr. Vijendra Kumar Yadav*
Asst. Professor, Political Science Department
A.K.(P.G.) College Shikohabad Firozabad (U.P.)

Abstract

प्रस्तुत शोध पत्र में सबसे पहले दक्षिण एशिया की अवस्थिति एवं उसमें भारत की केंद्रीय भूमिका को समझाया गया है। इसके पश्चात इस क्षेत्र में भारत की सुरक्षा एवं विदेश नीति की जरूरत को समझने का प्रयास करते हुए इस क्षेत्र में अब तक भारत की हॉर्ड पॉवर नीति एवं सॉफ्ट पॉवर नीति की समानांतर रूप से चर्चा की गई है। तत्पश्चात सॉफ्ट पॉवर की अवधारणा को समझने का प्रयास किया गया है। पुनः भारतीय सॉफ्ट पॉवर का विश्लेषण करते हुए भारत द्वारा अब तक इसके दक्षिण एशिया में प्रयोग व उसकी प्रभावशीलता को समझने का प्रयास किया गया है। भारत द्वारा दक्षिण एशिया में सॉफ्ट पॉवर पॉलिसी के प्रयोग की संभावना एवं उसके संभावित परिणामों को समझते हुए इस शोध पत्र का समापन किया गया है।.

Keywords: *दक्षिण एशिया, विदेश नीति, सॉफ्ट पावर, हॉर्ड पॉवर, स्मार्ट पावर,भारतीय संस्कृति,सांस्कृतिक कूटनीति*

Received: 11/02/2026
Accepted: 24/03/2026
Published: 31/03/2026

***Corresponding Author:**
Dr. Vijendra Kumar Yadav
Email: vijendrakyadav786@gmail.com

INTRODUCTION

दक्षिण एशिया भौगोलिक रूप से दक्षिणावर्त रूप में क्रमशः पश्चिम एशिया, मध्य एशिया, पूर्वी एशिया, दक्षिण पूर्व एशिया एवं हिन्द महासागर से घिरा हुआ क्षेत्र है। इस क्षेत्र में कुल आठ देश- अफगानिस्तान, पाकिस्तान, भारत, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, श्रीलंका व मालदीव अवस्थित हैं। भारत दक्षिण एशिया के केन्द्रीय भाग में स्थित इस क्षेत्र का जनसंख्या व आकार के दृष्टिकोण से सबसे बड़ा देश है। भारत का भूगोल भारत को स्थलीय व समुद्री शक्ति के रूप में स्थापित करता है। सापेक्ष रूप से भारत एक प्राचीन सभ्यता वाला नवीन देश है। भारत की समृद्धि एवं विकास भारत के दक्षिण एशियाई पड़ोसियों के समृद्धि एवं विकास से घनिष्ठ रूप से जुड़े जुए हैं। भारत के दक्षिण एशियाई पड़ोसी भले ही राजनीतिक रूप से अलग देश हैं परन्तु ये वृहत्तर भारतीय सभ्यता के ही भाग हैं जिनमें कई उभयनिष्ठ समानताएँ एवं विभिन्नताएँ हैं।

अपनी सुरक्षा व विदेश-नीति के लक्ष्यों को सुनिश्चित करने के लिए भारत को अपने पड़ोसी देशों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए और भारत की सुरक्षा व विदेश नीति को दक्षिण एशियाई कारक कैसे प्रभावित करते हैं ? 21वीं सदी में देश को विकास, शान्ति व समृद्धि के मार्ग पर अबाध रूप से तभी आगे ले जाया जा सकता जब उपर्युक्त प्रश्नों पर तार्किक व उचित रूप से विचार किया जाए।

दक्षिण एशिया में शान्ति एवं स्थिरता बनाए रखने तथा क्षेत्र के एकीकरण के मार्ग में दो प्रमुख बाधाएं हैं - प्रथम, भारत का इस क्षेत्र में निर्विवाद रूप से प्रभावी शक्ति होना और दूसरा दक्षिण एशिया में बाह्य शक्तियों द्वारा हस्तक्षेप। इस क्षेत्र में भारत ने अपनी'कड़क-शक्ति' नीति (Hard Power Policy) की असफलता के चलते अपने नजरिए में परिवर्तन किया है और 'मृदु-शक्ति' (Soft Power) पर भरोसा जताया है।[1] वैसे तो किसी देश की मृदु-शक्ति उस देश की सभ्यता, संस्कृति, साहित्य, दर्शन, कूटनीति, वैश्विक संस्थाओं एवं संगठनों में सहभागिता एवं उसकी क्षमता और सामर्थ्य द्वारा निर्धारित होती है परन्तु जो देश वैश्विक स्तर पर अपने प्रभाव एवं हैसियत का विस्तार करना चाहते हैं उनके लिए इसका महत्व विशेष है।[2]

भारत के पास एक महत्वपूर्ण मृदु-शक्ति बनने की क्षमता व अवसर दोनों हैं। हालांकि सैन्य व आर्थिक-शक्ति के बिना किसी देश की मृदु-शक्ति बनने की चाह कोरी कल्पना साबित हो सकती है, परन्तु इस लिहाज से भी भारत क्षमतावान देश है। अपने प्रयासों के माध्यम से दक्षिण एशिया में भारत अपनी छबि बदलने का प्रयास कर

रहा है जिससे क्षेत्र के और अधिक देशों को आकर्षित कर सके। समृद्धि एवं शक्ति के साझा लक्ष्य को पाने हेतु भारत अपनी 'मृदु-शक्ति' का समुचित ढंग से प्रयोग करना चाह रहा है। इस शोध पत्र में भारत द्वारा अपने पड़ोस में साफ्ट पावर पालिसी के नवीनतम प्रयोगों एवं उसकी उपयोगिता की चर्चा की गयी है। अन्त में हम देखते हैं कि कैसे कुछ कमजोरियों के बावजूद यह नीति इस क्षेत्र में वास्तविक सकारात्मक परिवर्तन लाने में सक्षम है।

अब तक यही पाया गया है कि भारत की क्षेत्रीय नेतृत्व की अभिलाषा न केवल पाकिस्तान के द्वारा खारिज व बाधित की जाती रही है बल्कि भारत के अन्य पड़ोसी भी समय-समय पर ऐसा करते रहे हैं। क्षेत्र में भारत की असमानान्तर क्षमता व सामर्थ्य ही क्षेत्र के देशों के लिए भय एवं अविश्वास का अनवरत रुप से कारण बनी रही हैं। क्षेत्र में भारत की प्राकृतिक नेतृत्व क्षमता को वास्तविकता का जामा कैसे पहनाया जाए आज भी भारत के लिए सरल प्रश्न नहीं है।

दशकों से भारत अपने समस्याग्रस्त पड़ोस से निपटने एवं क्षेत्र में अपनी विशेष भूमिका बनाए रखने के लिए अनेक युक्तियों का सहारा लेता रहा है। इसमें प्रमुख रूप से अपनी 'कठोर-शक्ति' नीति के प्रयोग के सन्दर्भ में सैन्य-शक्ति के इस्तेमाल (उदाहरण के लिए 1971 में पूर्वी पाकिस्तान व 1983 से 1990 के बीच लंका में और आर्थिक दबाव के रुप में 1989 में नेपाल पर लगायी गयी नाकाबन्दी) की चर्चा की जा सकती है। शीतयुद्धोत्तर काल में भारत दक्षिण एशिया की वर्तमान समस्याओं का निराकरण किये बिना ही एशियाई व वैश्विक स्तर पर सक्रियता द्वारा अपनी क्षेत्रीय परिसीमाओं को तोड़ना चाहता है।[3] पिछले दो-तीन दशकों में भारत ने क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ाने तथा क्षेत्रीय समृद्धि की प्राप्ति के लिए लगातार अपनी 'साफ्ट-पावर' नीति को बढ़ावा दिया है तथा उसकी कोशिश रही है कि देश की आकर्षण शक्ति एवं विश्वसनीयता को बढ़ाया जाए परन्तु क्षेत्र में सहयोग के स्थायी माहौल को बनाने में भारत की अपनी पुरानी छवि ही आड़े आती रही है।

प्रायः यह देखा गया है कि भारत अपने को क्षेत्र में एक तर्क-संगतकर्त्ता (Rational Actor) मानता रहा है जबकि उसके पड़ोसी देश उसे क्षेत्रीय आक्रामक शक्ति के रूप में देखते रहे हैं। यही बात क्षेत्र में गत्यारोध का सबसे बड़ा कारण रही है।[4] यदि भारत की क्षेत्र के लिए वास्तविक अभिलाषाओं पर ध्यान न दिया जाय तो जो पड़ोसी देशों द्वारा उसकी आक्रामक छबि बनाई गयी है उससे क्षेत्रीय सुरक्षा, राजनीतिक सम्बन्ध व आर्थिक सहयोग नकारात्मक रूप से प्रभावित होते है। यदि भारत अपनी आकर्षण शक्ति को प्रभावशाली तरीके से सुधारे और अपने छोटे पड़ोसियों में अपने प्रति अधिक विश्वास पैदा कर सके तो भारत अपने हितों को और क्षेत्रीय स्थायित्व को भली-भाँति आगे बढ़ा सकता है। ऐसी परिस्थिति में देश की साफ्ट पावर का महत्व बेहद बढ़ जाता है।

सॉफ्ट पावर - 'सॉफ्ट-पावर' शब्द का सबसे पहले प्रयोग एवं उसे लोकप्रिय बनाने का कार्य अमेरिकी नवउदारवादी विचारक जोसेफ नाई जूनियर के द्वारा अपनी पुस्तक 'बाउन्ड टू लीड: द चेंजिग नेचर आफ अमेरिकन पावर' में 1990 में किया गया। शीघ्र ही इस शब्द का प्रयोग विद्वानों द्वारा, मीडिया एवं नीति-निर्माताओं द्वारा तथा विभिन्न देशों की विदेश नीति में होने लगा। न केवल अमेरिका बल्कि यूरोपियन-यूनियन, जापान, आस्ट्रेलिया, चीन व भारत में इस शब्दावली का व्यापक स्तर पर प्रयोग किया जाने लगा। साफ्ट-पावर शब्दावली का प्रयोग एक ढंग से नव-यथार्थवादियों के विरुद्ध किया गया। चूंकि नवयथार्थवादियों का जोर सैन्य व आर्थिक शक्ति पर रहा है परन्तु इसके विपरीत साफ्ट पावर के समर्थक यह मानते हैं कि शीतयुद्धोत्तर काल की वैश्विक दुनिया में जहाँ अन्तर्निभरता एवं संचार तकनीकी का तेजी से विकास एवं नए गैर-राज्य कर्त्ताओं का तेजी से ऊभार हुआ है साफ्ट पावर का उतना ही महत्व है जितना कि आर्थिक व सैन्य शक्ति का। किसी देश की साफ्ट पावर उसकी इस योग्यता पर निर्भर करती है कि अपनी अपेक्षा के अनुरूप वह दूसरे देशों की प्राथमिकताओं को कैसे प्रभावित करता है न कि दूसरे देशों को प्रलोभन देकर या मजबूर करके अपने उद्देश्य को पूरा करता है।[5] जोसेफ नाई के अनुसार किसी देश की साफ्ट पावर तीन चीजों से मजबूत होती है -1. संस्कृति 2. राजनीतिक मूल्य और 3. विदेश नीति। लेकिन शर्त यह है कि उस देश की संस्कृति दूसरे देशों के लिए आकर्षण का केन्द्र हो, उस देश के द्वारा उच्च राजनीतिक मूल्यों का परिपालन आन्तरिक राजनीति व विदेश नीति दोनों में किया जाता हो तथा उस देश की विदेश नीति की स्वीकार्यता हो।[6] ऐसा होने पर ही साफ्ट पावर को आर्थिक व सैन्य शक्ति से अलग समझा जायेगा। तथ्य यह भी है कि यदि कोई देश केवल साफ्ट पावर पर भरोसा करे और उसके पीछे सैन्य व आर्थिक शक्ति न हो तो उस देश की कमजोरी शीघ्रता से उजागर हो जायेगी जैसा कि 1962 के भारत-चीन युद्ध के समय हुआ।[7] यद्यपि स्वतन्त्रता के पश्चात् कमजोर आर्थिक व सैन्य शक्ति होने के बावजूद तत्कालीन प्रधानमन्त्री पं. जवाहर लाल नेहरू के नेतृत्व में भारत ने अपनी साफ्ट पावर का वैश्विक स्तर पर बेहतरीन प्रयोग किया था परन्तु चीन के साथ संघर्ष में पराजय से भारतीय साफ्ट पावर की परिसीमाएँ उजागर हो गयीं।[8]

भारतीय परिप्रेक्ष्य में सॉफ्ट पावर

भारत के लिए सॉफ्ट पावर की धारणा कोई नई व अदभुत बात नहीं है क्योंकि भारत सॉफ्ट पावर के उपकरणों का इस्तेमाल स्वतन्त्रता के बाद से ही करता रहा है यद्यपि इसके प्रयोग के स्वरूप एवं इसकी समझ को लेकर काफी बदलाव आया है। साफ्ट-पावर की अवधारणा समय के साथ विस्तृत होती गयी है। यद्यपि साफ्ट-पावर शब्द का प्रयोग शीत युद्ध के दौरान होना शुरू हुआ लेकिन भारत तो शुरू से ही दुनिया के उन चुनिन्दा देशों में शुमार रहा है जिनके पास साफ्ट-पावर के बेहद समृद्ध स्रोत रहे हैं। लम्बी औपनिवेशिक गुलामी के बाद आजाद हुए देश भारत के पास अपनी वैष्विक महत्वाकांक्षाएँ पूरा करने के लिए साफ्ट-पावर के अलावा कोई अन्य रास्ता हो भी नहीं सकता था क्योंकि उस समय भारत आर्थिक व सैन्य-शक्ति के रूप में विपन्न देश था। गुटनिरपेक्ष आन्दोलन का संस्थापक होने, साम्राज्यवादी व उपनिवेशवादी शक्तियों के आलोचक तथा शस्त्रीकरण का विरोध करते हुए भारत ने जिन मूल्य-आधारित नीतियों का समर्थन किया उससे नए स्वतन्त्र एवं विकासशील देशों में भारत अपनी आकर्षक छबि बनाने में कामयाब रहा। भारतीय आध्यात्मिकता, योग व चिकित्सा पद्धति, महात्मा गांधी की अंहिसा की विरासत में जैसे-जैसे पश्चिमी विकसित देशों की रुचि बढ़ी वैसे ही वैसे भारत विकसित दुनिया की सहानुभूति प्राप्त करने में सफल भी रहा है। लेकिन जैसे-जैसे नेहरू की आदर्शवादिता का प्राभव भारतीय विदेश नीति में घटा और यथार्थवाद का प्रभाव बढ़ा है वैसे ही भारतीय विदेश नीति में साफ्ट-पावर का प्रभाव भी घटता चला गया है।[9] परन्तु 1990 के दशक से भारतीय विदेश नीति में जे. नाई के नुस्खे का अनुकरण करते हुए साफ्ट पावर को अधिक महत्व देने का प्रयास दिखायी देता है। अब तक का अनुभव तो यही बताता है कि साफ्ट-पावर उपागम को भारतीय विदेश-नीति में बहुत तन्मयता से लागू करने का प्रयास नहीं

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

किया गया है। जबकि चीन में स्थित इसके विपरीत है। चीन ने भारत की अपेक्षा अपनी विदेश नीति में साफ्ट-पावर को अधिक महत्व दिया है।[10]

लेकिन यदि हम पिछले दो दशकों में भारतीय विदेश नीति-निर्माताओं द्वारा लिये गये निर्णयों को ध्यान से विष्लेषित करें तो हम पाते हैं कि तमाम ऐसे निर्णय लिये गये हैं जो भारत की साफ्ट-पावर क्षमता को बढ़ाने का कार्य करते हैं। परिणामतः ऐसे भारतीय विद्वानों एवं नीति-निर्माताओं की संख्या तेजी से बढ़ी है जिन्होंने भारतीय साफ्ट-पावर को काफी महत्व दिया है। जैसे सी. राजा मोहन ने प्रवासी भारतीयों को देश की साफ्ट पावर की सबसे बड़ी संपत्ति माना है।[11] साफ्ट पावर के समर्थकों में शशि थरूर का नाम सबसे पहले आता है। उनका कहना है कि भारत को सबसे अधिक ध्यान जिस चीज पर देना चाहिए वह साफ्ट पावर है न कि आर्थिक, सैन्य या परमाणुशक्ति।[12]

आई.सी.सी.आर. के अध्यक्ष रहे डॉ. करन सिंह का विदेशों में आयोजित होने वाले सांस्कृतिक उत्सवों के सम्बन्ध में कहना है कि सांस्कृतिक कूटनीति को पहले बहुत सतही तरीके से लिया जाता था लेकिन अब स्थिति बदल गयी है अब साफ्ट पावर का महत्व बढ़ गया है। अतः विदेशों में आयोजित होने वाले समारोहों में भारत को उदार-बहुलवादी एवं बहुसांस्कृतिक समाज के रूप में प्रदर्शित किये जाने की जरूरत है।[13]

भारतीय विद्वान शक्ति के दोनों रूपों के पेंचीदा सम्बन्धों को लेकर अनभिज्ञ नहीं हैं। उनके द्वारा वैदेशिक सम्बन्धों के संचालन के लिए हार्ड-पावर एवं साफ्ट-पावर दोनों को ही जरूरी माना गया है। यह बात उन्हें जोसेफ नाई के 'स्मार्ट पावर' की अवधारणा के नजदीक ले आती है। चीन के मुकाबले भारतीय पराजय के सम्बन्ध में शशि थरूर का कहना है कि यदि नेहरू की साफ्ट-पावर नीति के पीछे हार्ड पावर की ताकत रही होती तो भारत को 1962 जैसी शर्मनाक पराजय का सामना न करना पड़ता।[14] साफ्ट-पावर का महत्व व क्षमता तब प्रभावशाली तरीके से बढ़ जाती है जब उसके पीछे हार्ड पावर का सम्बल होता है। मौजूदा समय में भारतीय राजनीतिक नेतृत्व इसी मत के साथ आगे बढ़ रहा है।

वैसे भारतीय भारतीय साफ्ट पावर के स्वरूप एवं क्षमता को लेकर विद्वानों के बीच मत-वैभिन्य है। कुछ विद्वान भारतीय साफ्ट-पावर को लेकर आशावादी हैं।[15] शशि थरूर एवं यू. पुरुषोत्मन का नाम इस सन्दर्भ में लिया जा सकता है। कुछ विद्वानों की भारतीय साफ्ट-पावर को लेकर राय भिन्न है। उनका मानना है कि भारतीय साफ्ट पावर के विषय में जो लम्बी-चैड़ी बातें की जाती है वे यथार्थ से परे हैं। इस विषय में क्रिश्चियन वैगनर का मानना है कि भारत को बमुश्किल से साफ्ट पावर कहा जा सकता है। वे भारत को एक रक्षात्मक साफ्ट-पावर कहते हैं। उनका मानना है कि भारत एक ऐसा देश है जो न तो अपने राजनीतिक माडल को वैश्विक स्तर पर बढ़ावा देता है और न ही विदेशी निवेशकों को आकर्षित करने के लिए ही अपनी साफ्ट-पावर का इस्तेमाल करता है बल्कि इसके लिए वह अन्य उपायों का सहारा लेता है। क्रिश्चयन वैगनर एक बहुत महत्वपूर्ण तथ्य की ओर इशारा करते हुए कहते हैं भारत साफ्ट-पावर के सन्दर्भ में क्षमतावान देश तो है लेकिन अपनी क्षमता का सही उपयोग उसके द्वारा अब तक नहीं हो पाया है। जबकि देश के अन्तर्राष्ट्रीय प्रभाव में वृद्धि हेतु यह जरूरी है।[16]

दक्षिण एशिया के प्रति भारत की सॉफ्ट पावर पॉलिसी

भारत के पास साफ्ट-पावर के उपकरणों एवं नीतियों के रूप में एक ऐसा टूलबॉक्स है जिसके माध्यम से भारत निकट पड़ोस की बड़ी से बड़ी समस्या को साध सकता है। भारत अपनी विदेश नीति में साफ्ट-पावर को एक बार फिर से महत्वपूर्ण स्थान दे सकता है और दक्षिण एशिया के प्रति भारत के वर्तमान नजरिए के हिसाब से भी यह ठीक है। निम्नलिखित कारणों की वजह से भी ऐसा किया जाना आवश्यक है -

प्रथम, इस पूरे क्षेत्र में हार्ड-पावर की नीतियों की असफलता के चलते ऐसा किया जाना आवश्यक है क्योंकि हार्ड-पावर का इस्तेमाल करते हुए भारत दक्षिण एशियाई देशों के व्यवहार में अपेक्षानुरूप परिवर्तन कराने में सफल नहीं रहा है।[17] श्रीलंका, पाकिस्तान एवं नेपाल के साथ सम्बन्धों में भारत अपनी हार्ड पावर पालिसी की सीमाओं को समझ चुका है। द्वितीय, साफ्ट-पावर पालिसी के माध्यम से भारत इस पूरे क्षेत्र में अपनी पहले की नकारात्मक छवि को बदल सकता है। पड़ोसी देशों से सम्बन्धों को सुधारने की मजबूरी भारत की नीति में परिवर्तन की मुख्य वजह होनी चाहिए।[18]

इयॉन हॉल का मानना है कि भारत का लोगों के बीच सम्बन्धों को बढ़ावा देने का प्रयास इस बात को दर्शाता है कि भारत इस बात का अनुभव करता है कि निकट पड़ोस में उसका सम्बन्ध उतना अच्छा नहीं है जितना कि होना चाहिए।[19] तीसरी महत्वपूर्ण बात चीन के प्रति नकारात्मकता का भाव है। इस क्षेत्र के देशों में इन परिस्थितियों में चीन द्वारा जिस भी प्रकार की सहूलियत देने का प्रयास किया जाता है ठीक उसी प्रकार की सहूलियत देना भारत की मजबूरी हो जाती है। पिछले कुछ वर्षों में चीन ने दक्षिण एशियाई देशों की प्रत्येक स्तर पर भारी मदद की है। श्रीलंका को चीन ने अन्तर्राष्ट्रीय मंचो पर समर्थन देने के साथ ही अवसंरचनात्मक विकास के लिए वित्तीय सहायता एवं निवेश के रूप में भारी सहायता प्रदान की है। हम्बनटोटा इसका एक प्रमुख उदाहरण है। चीन ने पाकिस्तान को भी ग्वादर बन्दरगाह के विकास में ऐसी ही मदद दी है। इसके साथ ही चीन ने पूरे क्षेत्र में कन्फ्यूसियस सेन्टर स्थापित करने का महत्वपूर्ण काम किया है।

क्षेत्रीय गतिरोध समाप्त करने एवं इस पूरे क्षेत्र में अपनी स्वीकार्यता बढ़ाने के लिए भारत अपनी क्षेत्रीय रणनीति में साफ्ट-पावर के महत्व को बढ़ाने का प्रयास वर्षों से करता रहा है। भारत के इस नए नजरिए में कई चीजें शामिल हैं यथा - सौम्य विदेश नीति (Benign Foreign Policy), आर्थिक-अन्तरनिर्भरता को बढ़ावा देना, मजबूत सांस्कृतिक सहयोग एवं विदेशी सहायता प्रदान करना। वैश्वीकरण एवं आतंकवाद के खिलाफ युद्ध के कारण भी भारत की इस क्षेत्रीय साफ्ट पावर की नीति को बढ़ावा मिला है।

दक्षिण एशिया के प्रति भारतीय विदेश नीति में सन् 1996 के मध्य में 'गुजराल डाक्ट्रिन' के रूप में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन सामने आया। इसके द्वारा गैर-पारस्परिकता के सिद्धान्त पर चलते हुए अपने छोटे पड़ोसियों के लिए एकतरफा रियायत पर जोर दिया गया। इसके द्वारा भारत ने अपने को एक उदार बड़े भाई की तरह पेश किया और यह दिखाने की कोशिश की कि वह अपने पड़ोसियों के अभावों व सरोकारों के प्रति पहले की अपेक्षा ज्यादा उत्तरदायी बन गया है। इसके द्वारा भारत ने अपनी पुरानी आक्रामक छवि को एकदम से बदलने का प्रयास किया।

बदली हुई नयी रणनीति के तहत भारत ने क्षेत्रीय आर्थिक सहयोग के लिए भी विशेष बल देना शुरू किया। पाकिस्तान के साथ तनाव भरे सम्बन्धों के बावजूद भारत द्वारा पाकिस्तान को सन् 1996 में एकतरफा MFN (Most Favoured Nation) राज्य का दर्जा दिया गया हालांकि बाद में इस स्थिति में कई बार परिवर्तन होता रहा है। भारत की कोशिश रही है कि सार्क के तहत इस पूरे क्षेत्र को व्यापार मुक्त क्षेत्र के रूप में विकसित किया जाय। श्रीलंका के साथ सन् 1998 में किया गया द्विपक्षीय मुक्त व्यापार क्षेत्र समझौता इसी मानसिकता का परिणाम था। अपने इन प्रयासों के माध्यम से भारत अपने छोटे पड़ोसियों को ज्यादा तरजीह देना चाहता है। अपनी इसी भावना के अनुरूप भारत अपने दो पड़ोसियों नेपाल व भूटान की इच्छा के अनुरूप द्विपक्षीय सन्धियों को समय के अनुरूप बदलने के लिए भी सहमत रहा है। भारत के इस नजरिए को स्पष्टतम् रूप में व्यक्त करते हुए 2005 में विदेश सचिव श्याम सरन ने कहा था - भारत के लिए अपने पड़ोसियों को यह समझाना कि भारत उनके लिए अवसर है खतरा नहीं, भारत की कूटनीति के लिए यह बहुत बड़ी चुनौती है। यदि भारत के पड़ोसी भारत पर यकीन करें तो भारत उनके आर्थिक विकास के लिए बहुत बड़ा अवसर है। एक साल बाद इस बात की पुष्टि विदेश सचिव शिव-शंकर मेनन द्वारा भी की गयी जब उन्होंने कहा कि हम अपने पड़ोस को अपनी आर्थिक समृद्धि में भागीदार बनाना चाहतें हैं जिससे घनिष्ठ अन्तर्निर्भरता के विचार को आगे बढ़ाया जा सके।

पड़ोसियों के साथ सम्बन्धों में भारत द्वारा दी जाने वाली आर्थिक मदद का महत्वपूर्ण स्थान है। यद्यपि विगत दो दशकों में भारत द्वारा दी जाने वाली मदद की मात्रा एवं उसकी भोगोलिक पहुँच दोनों का प्रसार हुआ है। दक्षिण एशिया को इस मदद का सबसे बड़ा भाग प्राप्त होता है। क्रिश्चियन वैगनर ने दक्षिण एशिया को दी जाने वाली भारतीय सहायता और एकतरफा आर्थिक रियायत को साफ्ट पावर के नजरिए से एक बेहतरीन उदाहरण बताया है।[20]

हाल के वर्षों में भारत ने जन-कूटनीति के माध्यम से दक्षिण एशिया के लोगों तक सीधे पहुँचने का प्रयास किया है जैसा कि इयॉन हॉल का कहना है - वैसे तो PDD(Public Diplomacy division) पश्चिमी राष्ट्रों, पूर्व के देशों व दक्षिण पूर्व एशिया के लिए निर्देशित है लेकिन व्यवहार में PDD के द्वारा भारत के निकट पड़ोस व विकासशील दुनिया में भारत की छबि सुधारने के लिए भी कार्य किया गया है। इसके द्वारा अब तक जिन सम्मेलनों व कार्यशालाओं का आयोजन किया गया उनमें अफगानिस्तान, यूथोपिया, कजाकिस्तान, मारीशस, मंगोलिया, नेपाल, पाकिस्तान, साउथ अफ्रीका, ताइवान, तजाकिस्तान जैसे देशों को सहभागी बनाया जाता रहा है। जन कूटनीति विभाग के द्वारा भारत और उसके निकट पड़ोस के विषय में अंग्रेजी, दारी, पश्तो, तमिल, नेपाली सहित अन्य दक्षिण एशियाई भाषाओं में वृत्ति चित्रों का निर्माण किया जाता रहा है।[21] जिस प्रकार से दुनिया में भारत व उसके पड़ोसियों की एक दूसरे को लेकर धारणाएँ बदल रही हैं उसे देखते हुए एवं इस पूरे क्षेत्र के आकार को देखते हुए PDD द्वारा किये जा रहे प्रयास बहुत कम हैं।

इस पूरे क्षेत्र में भारत सबसे पुराना, स्थायी व तुलनात्मक रूप से परिपक्व लोकतान्त्रिक देश है। भारत में लोकतन्त्र की जड़े बहुत गहरी हैं। यदि भारत की विविधता व इसके आकार को ध्यान में रखते हुए बात की जाय तो कहा जा सकता है कि भारत धार्मिक व नृजातीय तनावों को दुनिया के किसी देश के मुकाबले अच्छे ढंग से सँभालता है। इन सबके बावजूद भारत का इस क्षेत्र में लोकतन्त्र को बढ़ावा देने के प्रति नजरिया सावधानीपूर्ण रहा है। अपनी पुरानी छवि को बदलते हुए भारत यह भी नहीं दिखाना चाहता कि उसके द्वारा दूसरे देशों की सम्प्रभुता का उल्लंघन किया जा रहा है।

अहस्तक्षेप के सिद्धान्त एवं लोकतान्त्रिक दक्षिण एशिया की चाह के बीच का अन्तराल पाटने के लिए भारत ने सिविल सोसाइटी को और अधिक आकर्षित करने पर जोर दिया है। इसके लिए भारत ने दक्षिण एशिया के लोगों के मध्य पारस्परिकता को बढ़ाने के लिए आधिकारिक प्रस्ताव पेश करने का समर्थन किया है। इस सन्दर्भ में सन् 2005 में विदेश सचिव श्याम सरन ने कहा था - हम लोगों के बीच पारस्परिकता को बढ़ावा देंगे जो स्पष्टतः सांस्कृतिक सम्बन्धों पर आधारित होगा और जो दक्षिण एशिया के लोगों को जोड़ने का कार्य करेगा। दक्षिण एशिया में शान्ति एवं सौहार्द्र बनाए रखने के लिए हमें सरकारी प्रयासों से ऊपर उठते हुए लोगों को आपस में जोड़ने का प्रयास करना होगा। अपनी इस इच्छा को पूरा करने के क्रम में भारत ने अफगानिस्तान एवं नेपाल में लोकतान्त्रिक प्रक्रिया का समर्थन किया है।

भारतीय साफ्ट-पावर के नजरिए से दक्षिण एशिया में सांस्कृतिक व शैक्षणिक सहयोग एक महत्वपूर्ण तत्व है। भारत दक्षिण एशिया के देशों के साथ साझा सांस्कृतिक, भाषाई, नृजातीय व धार्मिक विरासत रखता है। जो साफ्ट पावर के लिहाज से बेहद अहम है। पाकिस्तान व बांग्लादेश आजादी से पहले एक ही राजनीतिक व्यवस्था के अंग रहे हैं तो वही नेपाल दुनिया के कुछ गिने-चुने देशों में से हैं जहां हिन्दुओं का बहुमत है। श्रीलंका में तमिलों की बहुत बड़ी संख्या है तो अफगानिस्तान से भारत के प्राचीनकाल से ही गहरे सम्बन्ध रहे हैं। भूटान बौद्ध धर्मावलम्बियों का देश है। ये सब चीजें मिलकर सभी दक्षिण एशियाई देशों व भारत के मध्य प्राकृतिक रूप से एक गहरे जुड़ाव का निर्माण करती हैं। भारतीय संगीत व फिल्में पाकिस्तान व अफगानिस्तान में अत्यधिक लोकप्रिय रहे हैं। स्वाभाविकता व सरकारी प्रयासों की निरन्तरता के कारण ऐसा होना सम्भव हो पाया है।

दक्षिण एशिया में भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देने में भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद (ICCR) का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसके द्वारा अफगानिस्तान, नेपाल, बांग्लादेश, श्रीलंका के विश्वविद्यालयों में भारतीय अध्ययन पीठों की स्थापना की गयी है। जैसा कि आगे सारणी में दर्शाया गया है। कोलम्बो में भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र सन् 1998 से कार्य कर रहा है। भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद द्वारा काबुल व काठमाण्डू (2007) ढाका व थिम्फू (2010), माले (2011) में सांस्कृतिक केन्द्रों की स्थापना की गयी है। इस प्रकार हम देखते हैं कि पाकिस्तान को छोड़कर सभी सार्क देशों में ICCR द्वारा सांस्कृतिक केन्द्रों की स्थापना की गयी है। इन केन्द्रों द्वारा पुस्तकालयों का संचालन करने के साथ ही साथ अन्य बहुत से कार्य किये जाते हैं। इसके द्वारा योग, भारतीय शास्त्रीय संगीत व नृत्य पर पाठ्यक्रमों व कक्षाओं का संचालन किया जाता है। संगीत से जुड़े कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। सेमिनार आयोजित किये जाते हैं। फिल्में भी दिखाने का कार्य इन केन्द्रों द्वारा किया जाता है।

भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद द्वारा सार्क देशों के छात्रों के लिए छात्रवृत्तियों की संख्या को बढ़ाया गया है। अफगानिस्तान के लिए विशेष व्यवस्था की गयी है। जिसके तहत 650 से ज्यादा छात्रवृत्तियां प्रतिवर्ष प्रदान की जाती

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

हैं। दक्षिण एशिया के छात्रों को प्रदान की जाने वाली छात्रवृत्तियों की संख्या बढ़कर 1030 के लगभग हो गयी है जो दुनिया के लगभग 80 देशों को प्रदान की जाने वाली छात्रवृत्तियों का लगभग 45% है। भारत ने सार्क द्वारा प्रस्तावित दक्षिण एशियाई विश्वविद्यालय को उत्कृष्टता के एक केन्द्र के रूप में स्थापित करने का समर्थन किया है। इसकी सन् 2011 में दिल्ली में शुरुआत भी हो चुकी है। भारत द्वारा एक अन्य महत्वपूर्ण शैक्षणिक कदम उठाते हुए सिंगापुर, जापान व चीन के साथ काम करते हुए सदियों के पश्चात् नालन्दा विश्वविद्यालय को पुनः खोलने का निर्णय लिया गया है। एम.डी. मुनी का मानना है कि यह निर्धारित है कि नालन्दा विश्वविद्यालय दो स्तरों पर साफ्ट-पावर के एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में उदित होगा – पहला, पश्चिम के मुकाबले एशियाई उभार के उपकरण के रूप में और दूसरा, एशिया के सन्दर्भ में भारत के उभार के उपकरण के रूप में।[22]

Table ▪. Major India's Soft Power Initiatives in South Asia

	Afghanistan	Bangladesh	Bhutan	Maldives	Nepal	Sri Lanka	Pakistan
ICCR Chairs	Nangarhar University (Jalalabad)	University of Dhaka (Dhaka)	–	–	Tribhuwan University (Kathmandu) Pokhara University (Pokhara)	University of Colombo (Colombo)	–
Indian Cultural Centres	Indian Culture Centre—Kabul	Indira Gandhi Cultural Centre—Dhaka	Nehru Wangchuk Cultural Centre—Thimphu	Indian Cultural Centre—Male	Indian Cultural Centre—Kathmandu	Indian Cultural Centre—Colombo	–
Scholarship schemes	679 Special Scholarships for Afghanistan—675 General Cultural Scholarship Scheme—4	102+ Bangladesh Scholarship Scheme—100 Commonwealth Scholarship Scheme—2 IOR-ARC Scheme	–	37 Aid to Maldives—20 General Cultural Scholarship Scheme—13 Commonwealth Scholarship Scheme—4	119 Silver Jubilee Scheme—64 Commonwealth Scholarship Scheme—55	65+ Sri Lanka Scholarship Scheme—60 Commonwealth Scholarship Scheme—5 IOR-ARC Scheme	–
Technical and Economic cooperation—2012/13 in rupees crores (share in total)	(491.16 15.19 per cent)	280.00 (8.66 per cent)	1171.06 (36.21 per cent)	30.00 (0.93 per cent)	270.00 (8.35 per cent)	290.00 (8.97 per cent)	0

Source: List of ICCR's Chairs Abroad, http://www.iccrindia.net/chairslist.html,

निष्कर्ष

दक्षिण एशिया में शान्ति एवं स्थिरता बनाए रखने के मार्ग में जो दो प्रमुख बाधाएँ हैं उनसे निपटने के लिए भारत केवल और केवल अपनी साफ्ट पावर पर भरोसा कर सकता है। भारत के पास एक महत्वपूर्ण साफ्ट पावर बनने की क्षमता व अवसर दोनों हैं परन्तु बिना सैन्य शक्ति व आर्थिक शक्ति के विस्तार के ऐसा नहीं किया जाना चाहिए। हार्ड पावर व साफ्ट पावर के सन्दर्भ में क्षमतावान देश होने के कारण भारत को अपने प्रयासों के माध्यम से दक्षिण एशिया में अपनी छवि बदलने का प्रयास करते रहना चाहिए। दक्षिण एशिया में अपनी हार्ड पावर पालिसी की असफलता के चलते भारत को अपने नजरिए में परिवर्तन करना ही पड़ेगा। ऐसे में भारत को अपनी साफ्ट पावर पालिसी को ही आगे बढ़ाना पड़ेगा। जोसेफ नाई द्वारा विकसित ढांचे के आधार पर भारतीय साफ्ट पावर की विशेषताओं को देखा जाय तो भारतीय संस्कृति, राजनीतिक मूल्य व विदेशनीति की भूमिका दक्षिण एशिया के लिए वेहद महत्वपूर्ण है।

भारतीय संस्कृति में ही वह शक्ति है जो वर्तमान वैश्वीकृत दुनिया में लोगों को पश्चिम व पूरब की मानसिकता से बाहर निकालकर एक बेहतर व समृद्धिशाली भविष्य की ओर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर सकती है। अपनी इन्हीं क्षमताओं के मद्देनजर भारत दक्षिण एशिया में मानवाधिकार की परिस्थितियां बेहतर करते हुए एक समृद्धिशाली दक्षिण एशिया की परिकल्पना साकार कर सकता है परन्तु साथ ही यह भी जरूरी है भारत अपनी राजनीतिक मूल्यों की विरासत व विदेश नीति के तमाम उपकरणों का बेहतर प्रयोग करता रहे। ऐसा करते हुए भारत वाह्य शक्तियों को दक्षिण एशिया से दूर रखने में सक्षम हो सकेगा और अपने दक्षिण एशियाई पड़ोसी देशों के अन्दर अपने प्रति बैठी आशंका को कम कर सकेगा।

फिर भी उपर्युक्त अध्ययन के आधार पर हम निम्न तीन निष्कर्षों तक पहुँचते हैं। प्रथम, भारत ने अपनी क्षेत्रीय रणनीति में साफ्ट पावर के उपकरणों का प्रयोग किया है। ऐसा भारत द्वारा क्षेत्र में अपनी हार्ड पावर की असफलता के अनुभव के चलते किया गया है। साथ ही इस पूरे क्षेत्र के देशों में अपने प्रति विश्वास को और अधिक मजबूत करने लिए ऐसा किया गया है ताकि क्षेत्रीय नेतृत्व को और मजबूती प्रदान की जा सके। ऐसा करते हुए भारत अपने पड़ोसी देशों को अधिक राजनीतिक व आर्थिक सहयोग हेतु तैयार कर सकेगा।

दूसरा, भारत की साफ्ट पावर की नीति क्षेत्र में विवाद के मुख्य विन्दुओं के बने रहने के बावजूद अच्छे परिणाम दे सकती है। इस रास्ते पर चलते हुए भारत दक्षिण एशियाई लोगों के बीच सम्पर्क को बढ़ावा दे सकता है, क्षेत्र में व्यापार व निवेश को बढ़ा सकता है। साफ्ट पावर की नीति के द्वारा ही भारत विदेशी सहायता को उच्चतम स्तर पर ले जा सकता है, क्षेत्र में लोकतान्त्रिक मूल्यों को बढ़ावा दे सकता है। सार्क के माध्यम से क्षेत्रीय सहयोग व एकीकरण को भारत साफ्ट पावर की नीति पर चलते हुए आगे बढ़ा सकता है। दक्षिण एशियाई समाजों एवं शासक वर्ग के विचारों में भारत को लेकर जो द्वैध है उसे साफ्ट पावर के माध्यम से कम किया जा सकता है। जैसे-जैसे क्षेत्र में लोकतांत्रिक मूल्यों को मजबूती मिलेगी वैसे-वैसे विभिन्न देशों की सरकारें जन-भावना के खिलाफ जाकर निर्णय लेने में अक्षम होती जायेगी और यह भारत के लिए आवश्यक है। भारत अपनी अर्थव्यवस्था के विकास के साथ ही साथ इस क्षेत्र के ज्यादा से ज्यादा लोगों को विश्वास दिला सकेगा कि वह उनके लिए चुनौती नहीं बल्कि अवसर है।

तीसरा, भारत की दक्षिण एशिया में साफ्ट पावर पालिसी की सबसे कमजोर कड़ी है - पाकिस्तान को मुख्य धारा में न रखना जबकि यह स्थापित सत्य है कि भारत एवं पाकिस्तान के खराब सम्बन्ध पूरे क्षेत्र की शान्ति एवं सुरक्षा के लिए खतरा हैं। अतः दोनों देशों के मध्य विश्वास बहाली के लिए बहुत कुछ किये जाने की जरूरत है। दोनों देशों के मध्य बार-बार होने वाले सैन्य-संघर्षों, सीमा-विवादों, राजनीतिक तनावों व भू-राजनीतिक प्रतिद्वन्द्विता के बावजूद भारत को सीधे पाकिस्तानी आवाम तक सीधे पहुँचने की कोशिश करनी चाहिए। भारत अपने सांस्कृतिक केन्द्रों, अध्ययन पीठों, महत्वाकांक्षी छात्रवृत्ति कार्यक्रमों, विकास की नई सहयोगात्मक परियोजनाओं, बीजा नियमों को उदार बनाते हुए तथा अकादमिक व व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ावा देते हुए भारत विल्कुल ऐसा करने में सक्षम हो सकता है।

पाकिस्तान से उत्पन्न होने वाले आतंकवाद को लेकर भारत की चिन्ता जायज है फिर भी प्रत्येक पाकिस्तानी नागरिक को क्षमतावान आतंकी के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। यह न केवल आलोचना का विषय है बल्कि यह उल्टे रूप में आतंकवाद को अधिक मजबूती प्रदान करने वाली धारणा है। पाकिस्तान के सभ्य समाज तक सीधे पहुंचने की कोशिश होनी चाहिए साथ ही साथ भारत की सकारात्मक छवि को आगे बढ़ाया जाना चाहिए जिससे यह सन्देश आगे बढ़ाया जा सके कि भारत एक भरोसेमन्द व मित्रवत पड़ोसी के रूप में पाकिस्तान की प्रत्येक समस्या में उसके साथ खड़ा है। वर्तमान समय में दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय सहयोग, समृद्धि, शान्ति व

स्थिरता को सुनिश्चित करने के लिए यही सबसे अच्छी रणनीति है।

सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची

1. पैट्रिक कुग्येल, ''इण्डियाज साफ्ट पावर इन साउथ एशिया'', *इण्टरनेशनल स्टडीज*, जुलाई, 2012 पृ.सं. 351

2. टी.वी. पाल, ''इण्डियाज साफ्ट पावर इन ए. ग्लोबलाइजिंग वल्र्ड'', *करेन्ट हिस्ट्री* (न्यूयार्क, एन.वाई. ण्ण्अप्रैल 2014, पृ.सं. 157

3. राजेश एम. बसरूर, ''ग्लोबल क्वेस्ट एण्ड रिजनल रिवर्सल; राइजिंग इण्डिया एण्ड साउथ एशिया, *इन्टरनेशनल स्टडीज*, 2010, 47 (2-4) 267-284

4. ए.के. मिक्षा, ''द रिलैक्टैन्ट हेजोमान: इण्डियाज सेल्फ परसिप्सन एण्ड द साउथ एशियन स्ट्रेटेजिक इनवायरोनमेन्ट'', *कन्टेम्परेरी साउथ एशिया*, 12 (ड), सितम्बर (2003), पृ.सं. 399-417

5. जोसेफ नाई जूनियर, *'साफ्ट पावर: द मीन्स टू सक्सेज इन वल्र्ड पालिटिक्स'*, न्यूयार्क पब्लिक अफेयर्स, 2004, पृ.सं. 2

6. वही, पृ.सं. 11

7. टी.वी. पाल, पृ. सं. 157

8. वही, पृ.सं. 157

9. डी.एम. मैलोन, *'इस द एलीफैन्ट डान्स: कन्टेम्पोरेरी इण्डियन फारेन पालिसी'*; आक्सफोर्ड यूनवर्सिटी प्रेस, आक्सफोर्ड, 2011, पृ.सं. 252

10. जे. कुर्लेन्जिक, *'चार्म अफेन्सिव: हाऊ चाइनाज साफ्ट पावर इज ट्रान्सफार्मिंग द वल्र्ड'*, सी टी; येल यूनवर्सिटी प्रेस, न्यु हेवेन, 2007, पृ.सं. 6

11. सी.आर. मोहन, इण्डियन डायस्योरा एण्ड साफ्ट पावर, द हिन्दू 06 जनवरी, 2003

12. शशि थरूर, ''इण्डिया ऐज ए साफ्ट पावर'', *इण्डिया इण्टरनेशनल सेण्टर क्वार्टली*, 35(1), समर, 2008, पृ.सं. 32 - 45

13. एस. शुक्ला, ''साफ्ट पावर: इण्डिया टुडे'', 30 अक्टूबर 2006 शशि थरूर, पृ.सं. 43

14. यू. पुरुषोत्मन, ''शिफ्टिंग परसिप्सन्स आफ पावर: साफ्ट पावर एण्ड इण्डियाज फारेन पालिसी'', *जर्नल आफ पीस स्टडीज*, 2010, 17 (2-3)

15. क्रिश्चियन वैगनर, ''इण्डियाज साफ्ट पावर: प्रास्पेक्ट्स एण्ड लिमिटेशन्स'', *इण्डिया क्वार्टली*, 2010, 66(4) पृ.सं. 333-342

16. सी.वैंगनर, ''फ्राम हार्ड पावर टू साफ्ट पावर ? आइडियाज, इन्टरैक्सन, इन्स्टीट्यूशन्स, एण्ड इमिजेज इन इण्डियाज साउथ एशिया पालिसी'', वर्किंग पेपर नं. 26, *हेडलबर्ग पेपर्स इन साउथ एशियन एण्ड कम्पैरेटिव पालिटिक्स*, मार्च 2005

17. क्रिश्चियन वैगनर, ''इण्डियाज साफ्ट पावर: प्रास्पेक्ट्स एण्ड लिमिटेशन्स'', *इण्डिया क्वार्टली*, 2010, 66(4), पृ.सं. 333-342

18. इयान हाल,''इण्डियाज न्यू पब्लिक डिप्लोमेसी: साफ्ट पावर एण्ड लिमिट्स आफ गवर्नमेन्ट एक्शन, *एशियन सर्वे*, नवम्बर-दिसम्बर (2012) , 52(6), पृ.सं. 1091

19. क्रिश्चियन वैगनर, ''इण्डियाज साफ्ट पावर: प्रास्पेक्ट्स एण्ड लिमिटेशन्स'', *इण्डिया क्वार्टली*, 2010, 66(4), पृ.सं. 335

20. इयान हाल, ''इण्डियाज न्यू पब्लिक डिप्लोमेसी: साफ्ट पावर एण्ड लिमिट्स आफ गवर्नमेन्ट ऐक्शन'', *एशियन सर्वे*, नवम्बर-दिसम्बर 2012, 52(6), पृ.सं. 1096-1097

21. एस.डी. मुनी, 'नालन्दा: ए साफ्ट पावर प्रोजेक्ट', द हिन्दू, 30 अगस्त, 2010

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)